कन्नौज (कान्यकुब्ज) राज्य की उत्पत्ति

प्रोफेसर नवीन गिडियन
अध्यक्ष - इतिहास विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारत अत्यन्त प्राचीन देश है किन्तु आमतौर पर यह जानकारी नहीं है कि देश के अन्तर्गत पूर्वकालिन कन्नौज राज्य का भूभाग प्राचीनतम क्षेत्र है। पौराणिक कथाओं के अनुसार सृष्टि की रचना ब्रह्मावर्त तीर्थ में प्रारम्भ हुई थी जो कन्नौज से मिले हुए कानपुर जनपद में गंगातट पर स्थित है और जो कन्नौज राज्य का भाग था। यहीं पर ब्रह्मा जी ने अश्वमेघ यज्ञ करके संसार की रचना का श्रीगणेश किया था। अतः भारत के इतिहास में कन्नौज राज्य के इतिहास का विशेष महत्व है। इस इतिहास की काल अवधि पौराणिक समय से प्रारम्भ होकर लगभग सन् 1200 तक है जबकि गजनी के सुल्तान मोहम्मद गोरी ने पहले महाराज पृथ्वीराज को और बाद में कन्नौज नरेश जयचन्द्र को पराजित करके उत्तर भारत में मुसलमानी सल्तनत की नींव डाली। तभी स्वतंत्र रूप से कन्नौज का राज्य समाप्त हो गया। इस दीर्घकाल का इतिहास रोचक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद है और देश के गौरव का प्रतीक भी है।

'कन्नौज' या 'कान्यकुब्ज' शब्द के साथ ही भारतीय इतिहास के महान् योद्धा, परम धार्मिक, उदार एवं सर्वस्वदानी, स्वयं साहित्य सृष्टा एवं बाण, मयूरादि जैसे महान् साहित्यकारों के सम्पोशक, कला-मर्मज्ञ, कुशल शासक एवं विशाल साम्राज्य के संस्थापक सम्राट् हर्षवर्धन का सहसा स्मरण हो आता है। उन्हीं के शासन काल में कन्नौज का चरमोत्कर्ष प्राप्त हुआ, जिसे भारतीय इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

सम्राट् हर्ष से पूर्व भी मौखरिवंश का यह राज्य केन्द्र था और उनके बाद भी यहाँ गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट एवं गाहरवाल वंश के शासकों ने इसे गौरव प्रदान किया। यहाँ की समृद्धि विदेशी आक्रान्ताओं की आँखों का कांटा थी, इसीलिए मोहम्मद गौरी ने महाराज जयचन्द्र पर आक्रमण कर इस महान् शासन-केन्द्र को भूमिसात् ही कर दिया। परस्पर विभक्त भारतीय राजा कभी सम्मिलित होकर इन आक्रमणकारियों का सामना न कर सके, फलतः भारत के प्रातः सभी राज्य क्रमशः पराजित होते गए। 'कन्नौज' की तो, उसके पश्चात् जैसे राज्यश्री सदा के लिए ही विदा हो गई।

'कन्नौज का इतिहास' कन्नौज के उस वैभवपूर्ण अतीत का, विभिन्न स्रोतों से दोहन कर, गरिमामय चित्र प्रस्तुत करता है। भारतीय इतिहास के आदिकाल से लेकर उसके उत्कर्ष काल तक और उसके बाद भी आज तक 'कन्नौज' का सम्पूर्ण इतिहास इसमें प्रस्तुत किया गया है। पौराणिक स्रोतों से प्राप्त सामग्री भी महत्व की है, यह विचारणीय है।

'कन्नौज' आज भले ही एक अति सामान्य-सा नगर हो परन्तु प्राचीन काल में राज्य-केन्द्र होने के अतिरिक्त यह देश का महान् सांस्कृतिक केन्द्र भी रहा है। कान्यकुब्ज प्रदेश के आचार, व्यवहार, विद्वत्ता, संस्कृति, की अपनी विशेषताएँ हैं। इसके अवशेषों में आज भी उत्कृष्ट कला विद्यमान है। यहाँ रचित साहित्य

ISSN 2395-051X

विश्व-साहित्य की श्रेणी का है। इसका अवदान अतुलनीय है, अतः इसका इतिहास सभी के लिए पठनीय है।

कन्नौज के इतिहास की एक विशेषता और है कि कन्नौज की भूमि में जितने वीर योद्धा और निर्माता हुए हैं, उनकी ही जहाँ-तहाँ ऐसी छाप मिलती है कि यहाँ के व्यक्तियों ने शत्रुओं को आमंत्रित किया या परस्पर चुगलखोरी की। 'जयचंद' और 'माहिल' इन नामों में ही कुछ ऐसे प्रतीक सिमट गये हैं। जहाँ ये तथ्य हैं भी, वे हमें सीख देने के लिए हैं क्योंकि सृष्टि स्वयं भिन्न प्रकृतियों से बनी है और इस प्रकार के लोग कहाँ नहीं होते ?

"कान्यकुब्ज का राज्य अत्यन्त प्राचीन तथा अपने समय में व्यापक प्रसिद्धि का क्षेत्र था। कीर्तिवान हर्शवर्धन के विस्तृत शासनकाल से लेकर शताब्दियों तक उत्तर भारत में उसकी सार्वभौम महत्ता थी। प्रकृति की उस पर असीम अनुकम्पा थी और उसी के फलस्वरूप जब जब उसके सिंहासन पर शक्तिशाली तथा मेधावी शासक अभिशिक्त हुए तब तब अनिवार्य रूप से उसे वांछित सफलता प्राप्त होती रही। गंगा-मैदान के मध्य में अवस्थित होने के कारण सभी दिशाओं के व्यापार पथों पर, विशेषकर पूर्व में बंगाल और पश्चिम में पंजाब की ओर जाने वाले मार्गों पर उसका पूर्ण नियंत्रण था। मुख्यतः इसी कारण बंगाल के प्रभावशाली शासक के समय से लेकर हिन्दू शासन के अन्तिम दिनों तक उत्तर भारत में कन्नौज और बंगाल के बीच भीषण संघर्ष चलता रहा। साथ ही उसका दूसरा कारण स्थानीय शासकों की व्यक्तिगत गतिविधियों एवं महत्त्वाकांक्षाओं से उत्पन्न हुए प्रतिरोध भी थे। इस प्रकार कन्नौज राज्य का इतिहास अपने उत्कर्ष तथा अवनति दोनों ही के प्रसंगों में भारतीयता का घनिष्ट प्रतीक है और साथ ही परम रोचक भी।"[1]

"कन्नौज अत्यन्त प्राचीन और प्रसिद्ध नगर है। ईसवी सन् प्रारम्भ होने के बहुत पहले ही उसकी स्थापना हो चुकी थी किन्तु उसकी ऐतिहासिक महत्ता ई.पू. छठी. शताब्दी में प्रकाश में आई जब कि मौखरियों ने उसे अपनी राजधानी बनाया। मौखरि शासक ईशानवर्मन और सर्ववर्मन के राज्यकाल में मौखरि वंश की सत्ता और राजनीतिक प्रभाव की विशेष वृद्धि हुई जब कि उक्त शासक मगध के गुप्तवंशीय अन्तिम सम्राटों के संपर्क में आए। इन दोनों शक्तियों के बीच हुए अभियानों में मौखरियों को सफलता मिलती रही तथा अन्य कारणों से भी मगध साम्राज्य की अवनति होती रही। अन्ततः उत्तर भारत की सत्ता एवं राजनीति का केन्द्र मगध से कन्नौज स्थानान्तरित हो गया।"

"तत्पश्चात् सातवीं सदी के प्रारम्भ में मौखरियों के भाग्यचक्र में ऐसा प्रबल फेर हुआ कि जिसके फलस्वरूप थानेश्वर राज्य के नवयुवक उत्तराधिकारी महाराज हर्षवर्धन को कन्नौज राज्य को भी अपने संरक्षण में लेना पड़ा और शनैः शनैः हर्ष ने समस्त उत्तर भारत में अपने प्रभुत्व का सम्प्रसार किया जो दीर्घ काल तक कायम रहा। हर्ष की मृत्यु पर कन्नौज का भाग्य अंधकारमय हो गया और देश में अराजकता फैल गई। यह स्थिति लगभग आधी शताब्दी तक व्याप्त रही। तत्पश्चात महाराज यशोवर्मन इस राज्य के शासक हुए और उनके राज्यकाल में कन्नौज का भाग्योदय हुआ किन्तु यह सुसमय अधिक दिनों तक नहीं चला क्योंकि शीघ्र ही कश्मीर के ललितादित्य द्वारा उन्हें पददलित होना पड़ा।"

"कालान्तर में गुर्जर-प्रतिहार वंश का आधिपत्य आया जिसमें कुछ उल्लेखनीय शासक हुए। इस वंश का सर्वोत्तम स्वरूप महाराज भोज प्रथम तथा महेन्द्रपाल प्रथम के राज्यकाल में विकसित हुआ। इनकी सुदीर्घ रणयात्राओं के परिणाम स्वरूप कन्नौज राज्य की सीमाएँ दूरस्थ क्षेत्रों तक विस्तृत हुईं। इस युग की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति वह त्रिपक्षीय संघर्ष था जो प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों के बीच प्रायः निरन्तर चलता रहा।

तदनन्तर महमूद गजनवी के दो आक्रमणों के फलस्वरूप कन्नौज के वैभव को बड़ी क्षति पहुँची और उसके सहस्त्रों भव्य मन्दिर और गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ ध्वस्त हो गई।"

"कालान्तर में गाहरवाल वंश के शासन काल में महाराज गोविन्दचन्द्र द्वारा कनौज नगर व देश की लुप्त मर्यादा पुनर्स्थापित हुई। उन्होंने मगध पर भी विजय प्राप्त की और इस प्रकार गंगा नदी का दक्षिणी क्षेत्र उनके अधिकार में आ गया जो कन्नौज के वाणिज्य के प्रसार और राजनैतिक समृद्धि के लिए संजीवनी शक्ति था।"

"अन्ततः शहाबुद्दीन गोरी ने सभी समकालीन उत्तर भारतीय हिन्दू राज्यों को पद्दलित किया और उसी उपक्रम में कन्नौज राज्य भी अपने उच्चासन से अपदस्थ हो गया।"[2] कान्यकुब्ज अथवा कन्नौज शब्द दो अर्थों को सूचित करता है, यथा -

(क) कान्यकुब्ज देश अथवा कन्नौज देश, तथा (ख) कांन्यकुब्जपुरी (नगर), अथवा कन्नौज नगर।

कन्नौज (कान्यकुब्ज) राज्य की स्थिति- कान्यकुब्ज राज्य भारत का अत्यन्त प्राचीन भाग है और इसका इतिहास पौराणिक काल से प्रारम्भ होता है। इसका क्षेत्र समय-समय पर बदलता रहा है और नाम भी। मोटे तौर पर इस समय के उत्तर प्रदेश राज्य की सीमाएँ कन्नौज राज्य की सीमाओं के समानान्तर समझी जा सकती हैं। यह स्थिति मात्र कन्नौज राज्य के सम्बन्ध में है किन्तु कतिपय अवसरों पर कन्नौज राज्य के शासकों ने अन्य क्षेत्र अथवा प्रदेश या राज्य विजित कर लिए और सम्राट कहलाए - उदाहरणार्थ सम्राट हर्ष वर्धन (राज्यकाल 606-648 ई. है)।

कन्नौज राज्य की सीमायें लगभग वही हैं जो वर्तमान उत्तर प्रदेश की हैं। पुरातन काल में कन्नौज राज्य का क्षेत्र मध्यदेश के नाम से भी जाना जाता था। कन्नौज क्षेत्र दो विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जाता है जैसे कन्नौज (कान्यकुब्ज) प्रदेश तथा कन्नौज (कान्यकुब्ज) साम्राज्य। कन्नौज प्रदेश से तात्पर्य कन्नौज राज्य से है अर्थात जिस भूभाग पर कन्नौज के शासक स्वतंत्र रूप से राज्य करते थे। साथ ही साथ समय-समय पर कन्नौज राज्य के शासकों ने अन्य भूभाग भी विजित कर लिए और इस प्रकार एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। जैसे हर्ष ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। इस प्रकार के साम्राज्य को कन्नौज (कान्यकुब्ज) साम्राज्य की संज्ञा दी जाती है।

कन्नौज राज्य की राजधानी अपरिवर्तित रही है यद्यपि उसके नाम बदलते रहे हैं - जैसे उसका प्राचीन नाम महोदय था बाद में कान्यकुब्ज नगर हुआ और अन्त में कन्नौज हुआ। इसका पूर्व वैभव अब विलीन हो गया है और सम्प्रति यह केवल कन्नौज तहसील का मुख्यालय है जो फरूखाबाद जनपद के अन्तर्गत है।

कन्नौज (कान्यकुब्ज) देश के विभिन्न नाम

कान्यकुब्ज देश के प्राचीन तथा अर्वाचीन नाम निम्न प्रकार हैं -

ब्रह्मर्षि देश,	ब्रह्मावर्त,	कुशस्थली,	कान्यकुब्ज,
दक्षिण पांचाल,	मध्यप्रदेश,	अन्तर्वेदि,	माकन्दी,
द्वाव,	उत्तर-पश्चिमी प्रान्त[1],	संयुक्त प्रान्त,	आगरा व अवध

1937 ई. में संयुक्त प्रान्त से आगरा व अवध अलग गये। संयुक्त प्रान्त का वर्तमान नाम उत्तर प्रदेश है।[3]

अतः समय समय पर प्रत्येक नाम के क्षेत्र में भी सामयिक परिवर्तन होता रहा।

कन्नौज/'कान्यकुब्ज' देश के नामकरण की कथा

महाराज कुशनाभ की पुत्रियों का कुब्जा होना, 'कान्यकुब्ज' नामकरण'

इस क्षेत्र का नाम 'कान्यकुब्ज' क्यों पड़ा इसकी कथा बाल्मीक रामायण में निम्न प्रकार है-

विदित है कि महाराज कुशनाभ (जो इस क्षेत्र के शासक थे) के 100 कन्याएँ थीं। वे घृताची नाम की अप्सरा से जन्मी थीं और परम रूपवती थीं। ऐसे धर्मवान राजा से उत्पन्न संतति को राजधर्म और कुलधर्म में आदर्श होना ही चाहिये। सबका पालन-पोषण, आहार-विहार एक सा, राजसी भाव से हुआ। वयस्क होने पर आपदा ग्रसित हुई किन्तु पितृच्छा के विरूद्ध आचरण करने का किसी ने स्वप्न में भी मन न किया। कालान्तर में इन कन्याओं ने इस नगर और प्रदेश को अमर नाम 'कान्यकुब्ज' प्रदान किया। अतः इन कन्याओं की कुब्जता की कथा पर अब हम आते हैं।

रूप यौवन सम्पन्न ये कन्याएँ उद्यान में स्वच्छन्द रूप से क्रीड़ा किया करती थीं। एक दिन पवन देव ने मुग्ध होकर उनसे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि तुम सब मनुष्यों का अनुराग त्यागो जिससे तुम दीर्घ जीविनी हो सको। यदि तुम मेरी पत्नी बनोगी तो तुम्हारा यौवन अक्षय होगा और तुम अमर भी हो जाओगी। उत्तर में कन्याओं ने कहा कि आप हमारा अपमान क्यों करते हैं। हे वायुदेव, हम सब महाराज कुशनाभ की कन्याएँ हैं। अपने तपोबल से हम तुम्हें तुम्हारे लोक से नीचे गिरा सकती हैं, पर ऐसा इसलिए नहीं करतीं कि उससे हमारा तपोबल घट जाएगा और तप घटाना हमको अभीष्ट नहीं है। यह असम्भव है कि हम अपने सत्यवादी पिता की अवहेलना कर स्वयं अपने लिए वर तजबीज करें क्योंकि -

पिता हि प्रभुरस्माकं दैवतं परमं हि नः।
यस्य नो दास्यति पिता स नो भर्ता भविष्यति।। वा. रा. 32।22

अर्थात् हमारे पिता हमारे लिए परम देवता स्वरूप हैं और वे हमारे लिए मालिक हैं। वे हमें जिसे दे देंगे वही हमारा पति होगा।[1] कन्याओं की इन अपमान जनक बातों को सुन पवन देव कुपित हुए और उनको कुब्जा (कुबड़ी) बना दिया।

यथा - प्रविश्य सर्व गात्रणि बंभज भगवान्प्रभुः।। वा. रा. 32।23

अर्थात् उनके शरीर में प्रवेश कर उनके अंगों को टेढ़ा-मेढ़ा कर दिया। सम्भव है वात रोग से विकलांग होने का काव्यमय वर्णन वायुदेव के परम कोप (वायुः परमकोपनः) के कारण किया गया हो। सबको एक सा ही रोग हो जाना भी आश्चर्यजनक नहीं। युवतियों में हिस्टीरिया 'जैसे संक्रामक रोग देखे गये हैं अर्थात् एक को आपस्मारिक दशा में देखते ही दूसरी मूर्छित हो गिरने लगती है और उनके अंग ऐंठने लगते हैं। इसके अतिरिक्त इन सबका आहार विहार एक सा था। अतः ऐसी सहानुभूतिक भावनाएँ सब ही में होना अचरज की बात नहीं।

साथ ही वह ऐसा युग भी न था जब स्त्री चरित्र रक्षा के लिए परदा आविष्कार की आवश्यकता होती। स्वभाव से सच्चरित्र कन्याओं को देवता भी न छू सकते थे। उस युग के निश्छल हृदयों में असत्य का भी संचार न हो सकता था।

महाराज कुशनाभ ने अपनी पुत्रियों की यह दशा देखकर उसने प्रश्न किया। बालिकाओं ने स्पष्ट कह दिया कि यह सव वायु का दोष है, हम आपकी अनुमति के बिना कोई इस प्रकार का कार्य नहीं करना चाहतीं। जिन राजकुमारियों को स्वच्छन्द होते हुए पापचरण की अपेक्षा कष्ट सहन स्वीकार था, उनकी धर्मक्षमता पर पिता को क्यों न गर्व हो। फिर राजा ने उनकी इस प्रकार प्रशंसा की-

क्षान्तं क्षमावतां पुत्रय कर्तव्यं सुमहत् तम्।
एकमत्यमुपानस्य कुलानुरूपं तम्।। वा. रा. 33।6।।

अर्थात् तुमने पवन देव के प्रति क्षमा प्रदर्शित कर बहुत अच्छा काम किया है -- हे पुत्रियों क्षमाशीलों को ऐसा ही करना चाहिये। तुमने हमारे कुल के अनुरूप ही काम किया है। तथा-

अलंकारों हि नारीणां क्षमा तु पुरूषस्य वा।
दुष्करं तच्च यत् क्षान्तं त्रिदशेषु विशेषतः।। 33।7।।

अर्थात् स्त्रियों अथवा पुरूषों के लिए क्षमा ही आभूषण है। तुमने पवन देव को क्षमा कर दुष्कर काम किया है। रूप और ऐश्वर्य सम्पन्न लोगों के लिए तो अपराध-सहिष्णुता विशेष करके दुष्कर है।

यादृशी वः क्षमा पुंयः सर्वासामविशेषतः।
क्षमा दानं क्षमा सत्यं क्षमा यज्ञश्च पुत्रिकाः।। 33।8।।

अर्थात् जैसी क्षमा तुमने दिखाई विशेषकर वैसी क्षमा सब में नहीं होती। हे पुत्रियों ! क्षमा ही दान है, क्षमा ही सत्य है और क्षमा ही यज्ञ है। (यानी जो पुण्य दान देने, सत्य बोलने और यज्ञ करने से होता है, वही क्षमा से प्राप्त होता है।

थोड़ी नहीं अपितु सभी 100 सगी बहिनों के कुब्जा हो जाने के कारण राजा कुशनाभ की राजधानी तथा राज्य का नाम क्रमशः कान्यकुब्जा नगर तथा कान्यकुब्ज देश पड़ गया। यथा --

कुशनाभ ता तत्र पूर्व देशे महापुरी।
ते नैब नाम्ना दिव्यातु कान्यकुब्जेति विश्रुता। (शिव पुराण धर्म संहिता, 12।52)

भावार्थ, पूर्व देश में कुशनाभ ने एक महापुरी बसाई। वह नगरी कान्यकुब्ज नाम से जानी जाती है और वह उनके नाम के अनुरूप ही दिव्य है।

राजकुमारियों के स्वस्थ हो जाने के बाद भी यही नाम प्रचलित रहा। बहुत समय बाद अपभ्रंश रूप में यह नाम बदल कर कन्नौज/कनउज/कन्नौज हो गया। इस समय अन्तिम नाम ही प्रचलित है।

अतः स्पष्टतः यही है प्राचीन कन्नौज राज्य के राजनीतिक परिवर्तनों एवं वैभव का इतिहास। आज के दिन कन्नौज एक नगण्य नगर मात्र है तथापि गुप्त राजवंश के अवसान से लेकर मुस्लिम आक्रमणकारियों की अटूट सफलता के समय तक यह नगर संस्कृति और शिल्पि, धर्म और ऐश्वर्य, शक्ति और राजनीति का केन्द्र रहा। साथ ही उस पर अधिकार प्राप्त करना उन सभी शासकों का लक्ष्य था जो उत्तर भारत में सर्वोत्तम गरिमा अर्जित करने के अभिलाषी थे।[5]

सन्दर्भ

1. बर्नेट, एल. डी. : भूमिका - कन्नौज का इतिहास (रमाशंकर त्रिपाठी), नई दिल्ली, 1940
2. त्रिपाठी, रमाशंकर : प्राक्कथन - कन्नौज का इतिहास, नई दिल्ली, 1940
3. टंडन, प्रताप नारायण - कन्नौज, पुरातत्व और कला, पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज, 1978
4. दीक्षित, रामकुमार : कन्नौज, लखनऊ, 1955
5. मिश्र, आन्नद स्वरूप : कन्नौज का इतिहास, लखनऊ, 1990